सूतक निर्णय।

❀ मंगलाचरण ❀

दोहा—

नमूं वीर अकलंकविभु वीतराग जिनचंद।
नित्य निरंजन सिद्ध प्रभु जिनभेषी मुनिवृन्द ॥१॥

सूतकके अधिकारी।

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य त्रय उच्चवर्ण जगमांहि।
सूतकविधि इनके लिये कही जिनागम मांहि ॥२॥
शूद्र उभयविधिके कहे सत् अरु असत् विचार।
ते भी सूतककी विधो करें शक्ति अनुसार ॥३॥

सूतक नहीं माननेवाले पूजनादिके अनधिकारी हैं।

जे सूतक पालें नहीं, जानें विधि न लगार।
पूजन संयम दानमें, नहिं तिनका अधिकार ॥४॥

सूतकमें निषिद्ध कार्य ।

करे न पूजन दानविधि श्रावक सूतक मांहि ।
श्रुत जिनमंदिर उपकरण अम्बर छूवे नांहि ॥५॥

सूतकमर्यादा कहनेकी प्रतिज्ञा ।

अब सूतक मर्याद कछु कहूं यहां पर सोय ।
कही त्रिवर्णाचारमें सोमसेन गुरु जोय ॥६॥

सूतक और रजोधर्मके भेद ।

रजप्रसूत मृतछूत चउ सूतक भेद वखान ।
प्रकृतविकृतमय उभयविधि रजोधर्म पहिचान ॥७

रजोधर्मके स्वरूप ।

जो स्वभावसे नारिके मास मास रजस्राव ।
प्रकृतविकृत विन समयमें रोगादिक परभाव ॥८

ऋतुका अकाल ।

वर्ष पचासहि ऊपरे जो रजदर्शन होय ।
सो अकाल रजका कहा तहां न दूषण कोय ॥९॥

ऋतुसम्बन्धी अशौच ।

रज दर्शनसे नारिके रहे अशुचि दिन तीन।
चौथे दिन गृहकार्यके योग्य कहें परवीन ॥१०॥

अशौच दिनोंकी संभाल करनेकी रीति

अर्द्धरात्रिके प्रथमही रजऋतु जन्म जु होय।
पूर्व दिवस गिनिये तहां इम वरणें कोइ कोय ॥
कोई पूरण रात्रिमें यावत् रवि न उदैति।
हो रज ऋतु वा जन्म जो पूरव दिन गिन लैति ॥
कर त्रिभाग रजनी कहें हो सूतक युगभाग।
पूरव दिन गिनिये तहां अंत अपर दिन लाग ॥
यों सूतक मर्यादमें दिवस गिननकी रीति।
त्रिविध रूप तहँ अंतकी अजहुं चले जु पुनीत ॥

असमयमें रजस्वला हुई स्त्रीके विचार

जो बीते रितुकालके अष्टादश दिन मांहि।
रज हो दर्शन, नारिके शुद्धि स्नान करांहि ॥१५॥

दूसरा मत

षोडस दिनके पूर्वही ऋतुमति पुनः जु होइ।
अति यौवन सम्पन्नतिय शुद्ध स्नानहिं होइ॥१६॥
दिन अठारवेंमें सही जो रज दर्शन होय।
रहे अशुचि दिन दो तहां तृतिय दिवस शुच होय
दिन अठारवेंके परे जो रज गोचर होय।
रहे अशुचि दिन तीन लग तुरिय दिवस शुच होय

रजस्वलाका आचरण

सोवे तिय ऋतुकालमें आसन डाभ विछाय।
वास करे एकांतमें छुवे न नरतिय काय ॥१६॥
रहे मौन युत करे नहिं देव धर्मकी वात।
मालतिमाधविकुन्दकी लता गहे निज हाथ॥
खे शील गोरस विना भुंजे दिन इकवार।
करे न अंजन उबटना गंध लेप शृंगार ॥२१॥
कुसुममाल पहिने नहीं लखे न गुरु नृपदेव।
मुकुर मांहि निज रूप नहिं नहिं निरखे कुलदेव॥

देव नृपति कुल देव गुरु करे न इन सह बात।
तरुतल शयन करे नहीं और न सोवे खाट ॥२३॥
दिवस मांहि निद्रा तजे जपे मनहि जिन नाम।
वा अपराजित मंत्रका ध्यान धरे नित वाम ॥२४॥
पातल वा अंजुलिविषें भुंजे ऋतुवति नार।
धातुपात्र मध जो भखे करे अग्नि संस्कार ॥२५॥

रजस्वलाकी शुद्धि

तुरिय दिवस गोसर्गसे प्रथम नहावे प्रात।
सूर्योदयसे छह घड़ी तक गोसर्ग रहात ॥२६॥
भोजनादि गृहकार्यहित शुद्ध तुरिय दिन जान।
जिनमुनि पूजन दान हित शुद्ध पंचमे मान ॥२७

दो रजस्वलाओंके परस्पर मापणादि करनेपर प्रायश्चित्त

दो ऋतुमति तिय परस्पर करें न वचनालाप।
घोर पाप संचय तहां यातें मौनहि थाप ॥२८॥
दो सजाति ऋतुमति त्रियां छुवें परस्पर जोउ।
करें वास स्नान अरु गंधोदक लें दोउ ॥२९॥

दो सजाति ऋतुमति त्रियां करें परस्पर लास* ।
एकवास÷सहवास+ दो पंक्तिभोजत्रय वास ॥३०
दो विजाति तिय परस्पर करं यदो आलाप ।
करे उच्च उपवास दो नीच वर्ण इकथाप ॥३१॥
जो विजाति दो तिय करें पंक्ति भोज सहवास ।
उच्च करे चउतीन अरु हीन तीन दो वास ॥३२॥
हीन वर्ण उपवाससह करे दान विधि सोय ।
समगोत्री आलापमें एकवास विधि होय ॥
समगोत्री तिय करें जो पंक्तिभोज सहवास ।
क्रमसे प्रायश्चित्त तिन तीन दोय उपवास ॥३४॥

वर्णभेदसे प्रायश्चित्तोंका खुलासा

जो ब्राह्मणिक्षत्राणिद्वय ऋतुमति मिथः छुअंत ।
क्षत्राणी उपवास इक ब्राह्मणि दोय करंत ॥३५॥
जो ब्राह्मणि अरु वैश्य तिय रितुमति काय छुअंत ।
वैश्यवाम उपवास इक ब्राह्मणि तीन करंत ॥३६॥

---

* बातचीत ÷ उपवास । + रहना ।

जो ऋतुवति ब्राह्मणि छुवे पुष्पवती शूद्राणि ।
करे वास चउ ब्राह्मणी दानादिक शूद्राणि॥३७॥
क्षत्राणी रजवति छुवे रजयुत वैश्य तियाहि ।
क्षत्राणी उपवास दो वैश्या एक कराहि ॥३८॥
क्षत्राणी शूद्रा यदी ऋतुवति छूवें काय ।
तीनवास क्षत्रियवधू शूद्रा एक कराय ॥३९॥
वणिकवधू शूद्रा छुवे उभय ऋतुमति जांय ।
वणिक वधू उपवास त्रय शूद्राके इक होय ॥४०॥

विशेष

रज वलातियके यदी सूतक प्रेतक आय ।
वा अछूत छुवे कहीं तो नहाय कर खाय ॥४१॥
भोजन करते ही समय जो ऋतुवति हो जाय ।
वदन ग्रास बाहर तजे कर स्नान फिर खाय ॥
यदि शंका रजकी कहीं झूठी मन हो जाय ।
तदपि स्नान करे सही हृदय अशुचिता जाय ॥
कूप वापिका आदिसे पृथकहि जलको लेय ।
न्हवन करे ऋतुवति त्रिया नहिं जल अवगाहेय ॥

सूतक वा पातक विषैं प्रथम जु रज दर्शाय।
ता शिर अमृत मंत्रसे द्विजवर जल सिंचेय॥
तथा सुमध्यम पात्रको दान करे सुखकार।
शेष क्रिया रजधर्मकी करे पूर्व अनुसार॥४६॥
प्रगटे रज जाने नहीं तातिय छूत जु वस्तु।
वा तासें इक हाथ तक दूषित वस्तु समस्त॥
पुष्पवती तिय छूत जो भोजन वा अनवस्त*।
जान अजान भखे करे इक दो वास प्रशस्त॥
पुष्पवतीके निकट जो वसनादिक हों वस्त।
रहें पहरसे न्यूनभी तोहू हों अप्रशस्त॥
जा भित्तीके आसरे बैठे ऋतुवति नारि।
ता भित्ती वा पंक्तिमें बैठे जो नरनार॥
करें सचेल स्नानते होवे तब तिन शुद्धि।
जे माने नहिं बात ये नशे तिन्होंकी बुद्धि॥
यावत् रहे प्रवाह रज तावत् शुद्धि न होय।
बीते रज निज वस्तुतिय धोय नहावे सोय॥
जहं बैठे सोवे उठे भुंजे ऋतुवति वाम।
लीपे गोमयवारिसे दोय बार तिह ठाम॥

* चीजें (पदार्थ)।

पुष्पवतीका बाल हो पोड़स वर्षपर्यंत ।
छुवे बाल निज मात यदि शुद्धि स्नान करंत ॥
पयपायी जो बाल हो रहे मातके पास ।
मंत्रित जलके छांटसे शुद्धि कही है तास ॥५५
ऋतुवति भोजनपात्र बिन बहितस मधि खांय ।
जे नरते उपवास द्वय करें सचेल नहांय ॥५६॥
ऋतुवति बासस्थान वा पात्ररु बसन छुअंत ।
त नहाय महमंत्रकी शतवसु जाप जपंत ॥५७॥
पुष्पवतीकी अन्य जो कही क्रिया हो नाहिं ।
सो सब लोकाचारसे समझहु बुध शक नांहिं ॥५८॰

जन्मसम्बन्धी अशौच ।

स्रावरु पात प्रसूति ये जातक भेद जु तीन ।
गर्भमास चउ तीसका च्यवे श्राव लख लीन ॥५९
पंचम षष्ठम मासमें गर्भ च्यवे हो पात ।
मास सप्तमादिक विषें हो प्रसूति अवदात ॥६०
गर्भ स्रवे जे मास का ते दिन सूतक माय ।
नहिं सूतक पित्रादिको शुचिहित लेंय नहाय॥६१

गर्भपात जे मासका ते दिन सूतक माय।
पिता बंधुकों दिवस इक दिनबीते सुनहांय ॥६२
हो प्रसूति निर्दोष जब दश दिन सूतक होय।
पक्षमात्र सत्शूद्रके क्षत्रिय द्वादश जोय ॥ ६३
जो प्रसूति हो पुत्रकी दशदिन मातहिं होय।
अनरीक्षण सूतक तहां लखे न मातहिं कोय ॥६४
तथा बीस दिन और भी सूतक मातहिं जान।
पूजन दानादिक बिसें अनधिकार पहिचान ॥६५
हो कन्या दश दिन तहां सुतवत् सूतक होय।
अनधिकार दानादिमें दिवस तीसलों जोय ॥६६
यदि बालकका पिता भी जो छूवे जच्चाहि।
अनरीक्षण सूतक तहां दशदिन होवे ताहि ॥६७
जो जच्चा छूवे नहीं निकट प्रसूति बसंत।
हो अछूत दश दिवसलों नरनारी न छुअंत ॥६८

सूतकमें वर्णभेदसे दिनोंकी गणना।

विप्रहिं सूतक तीन दिन तहां वैश्य के चार।
क्षत्रियके दिन पंच हैं शूद्रहिं अष्ट विचार ॥६९

पुत्रमरणका अशौच ।

नाल छेदके प्रथम ही जीवित शिशु मर जाय।
ताका सूतक मातको दश दिन पूरणथाय ॥७०
तथा पितादिक बन्धुजन चउथी पीढ़ी तांहि।
सूतक ह्वै दिन तीनका यामें संशय नांहि ॥७१
नाल छेदके बाद मृतु मृत प्रसूति वा होय।
मातपितादि सपिंडको दश दिन सूतक जोय ॥७२
नालछेदसे दिवस दशके पूरव यदि बाल।
लहे मृत्यु सूतक तहां वेही दश दिन काल ॥७३
लहे मृत्यु दशवें दिवस सूतक हो दिन दोय।
मरे प्रभातहिं ग्यारवें सूतक दिन त्रय होय ॥७४
जातदंत बालक मरे दश दिन सूतक होय।
प्रत्यासन्न कुटुम्बिको एक दिवस है जोय ॥७५
करें अप्रत्यासन्निजन केवल वारिस्नान।
प्रत्यासन चउपीढ़ि अन-अप्रत्यासन मान ॥७६
करें मृतककी क्रिया सब प्रत्यासन्नी लोग।
नहीं अप्रत्यासन्न जन तास क्रियाके जोग ७७

चौल संस्कृत सुत मरे घरहिं दिवस दश जान।
पंच दिवस आसन्नजन अनासन्न इक मान ॥७८
संस्कार उपनयनयुत बालक मृत्यु लहाय।
चउथी पीढ़ीतक तहां दशदिन सूतक थाय ॥७९
तथा पंचमी षष्ठमी सप्तमितक क्रम जान।
पंच चार त्रय दिवस लों सूतक मान प्रमान ॥८०
सप्तमि पीढ़ीके परे सूतककी विधि नांहिं।
तदपि दशमकी अवधिलों मात्रस्नान कहांहि ॥८१

पुत्रोत्पत्तिका कुटुम्बिजनोंको अशौच।

सूतक पुत्रोत्पत्तिमें चउ पीढ़ी पर्यन्त।
दशदिन शेषहु पीढ़िमें मृतवत् दिवस कहंत ॥८२
सूतक भ्रातहिं तातको नाल छेदके पूर्व।
नहिं ह्वै यातें ते करें दानादिक जु अपूर्व ॥८३
नाल छेदके पूर्व यदि तिनको सूतक होय।
दान पान वितरणविधी कैसे ता घर होय ॥८४

यातें जा दिन होय शिशु ता दिन पूरण जान।
करे दान सन्मानविधि जिनआगम परमान ॥८५

विशेष

प्रथम मृतक सूतकविषैं द्वितिय मृतक हो जाय।
वा जातक सूतकविषैं पुनि जातक आजाय ॥८६
तहां प्रथम सूतक गये द्वितिय पूर्ण हो जाय।
मृतक विषें जातक तथा निश्चय पूरण थाय ॥८७
किंतु प्रसूतीके विषें मृत सूतक आ जाय।
तो प्रसूत पूरण भये मृत पूरण नहिं थाय ॥८८

परदेश सम्बन्धी अशौच।

जहं परवर्तित हो गिरा पड़े महानद बीच।
वा गिरि देशांतर वही कहा जिनागम बीच ॥८९
अथवा योजन तीसके बाद देशपर होय।
तहां सर्व सूतक विधी देश भेदसे होय ९॥०
मात तातकी मृत्यु यदि सुने पुत्र परदेश।
श्रवण दिवससे दिवस दश सूतक होय अशेष ॥

किंतु मृत्युसे दिवस दश मध्य सुने सुत जोय।
तो सूतक दश दिवसमें शेष दिवसलों होय ॥९२

पतिपत्नीसम्बन्धी अशौच

पति पत्नीके परस्पर मृत्यु भये पहिचान।
दश दश दिन सूतक विधी उपर्युक्तवत् जान॥
मात पिताकी मृत्यु सुत सुने जु वर्णान बाद।
पूर्णअशौच रखे तथा पति पत्निहिं मरजाद ॥९४

विशेष

जनकमृत्यु सूतकविषे सुने दिवंगत मात।
गये जनक सूतक तहां डेढ़ दिवस अवदात॥९५
रहे मात सूतक सही नहीं अधिक दिन और।
मातमृत्युमें यदि सुने जनकमृत्यु सुत दौर॥
पितृमरणसे दिवस दश सूतकविधि तहं होय।
तथा पितृ तेरइं प्रथम मातृश्राद्ध पुन होय॥९७
अथवा जननी जनककी सुने मृत्यु इक साथ।
होय उभय सूतक तहां पूरण इक ही साथ ॥९८

कन्यासम्बन्धी अशौच।

चौल कर्मके पूर्व यदि पुत्री मरण लहेय।
मात तात अरु भ्रातजन शुद्धि स्नान करेय॥
वृत्तग्रहणके पूर्व यदि चौल कर्मके बाद।
लहे मृत्यु कन्या दिवस इक सूतक मर्याद॥१००
पाणिग्रहणके पूर्व यदि वृत्तग्रहण पश्चात्।
मरे बालिका तीन दिन सूतक ह्वै है भ्रात॥१०१
जो विवाह उपरांत वह लहे मृत्यु पतिगेह।
मात तातको पत्निणी भ्रातस्नान करेह॥१०२
तथा पती श्वासुरादिको सूतक पूरण होय।
शेष कुटुम्बी जननिकों पूरववतविधि होय॥१०३
लहे मृत्यु निजमातगृह अथवा प्रसवे बाल।
तात मात निश्चय तहां सूतक दिनत्रय टाल॥१०४
इक दिन भाई बन्धुको ताका सूतक होय।
कन्याको पितुमातका सूतक दिनत्रय जोय १०५
मरे भ्रात निज बहिनघर बहिन तीन दिन टाल।
बहिन मरे निज भ्रातघर मातहिं दिनत्रय चाल॥

यदि दोनोंका ही मरण निज निजगृहपर होय ।
तो दोनोंको पक्षिणी सूतक निश्चय होय॥१०७
दिवस दोय निशि एकको कहें पक्षिणी देव ।
अहोरात्रि दिनरातको सद्य शीघ्र गिनलेव ॥१०८
सुने परस्पर मृत्यु जो साला अरु बहिनोउ ।
अथवा भौजाई ननद करें स्नान जु दोउ ॥१०९

नाना नानी मामा आदिका अशौच

नाना नानी मामि वा मामादौहित जोइ ।
फूफी मौसी भानजा मरें तास गृह कोइ ॥११०
तो ताको निश्चय सही सूतक दिन त्रय होय ।
अथवा ते निजघर मरे सूतक पक्षिणि सोय॥१११
गये दिवस दशके यदी इनका मरण सुनेय ।
वारि स्नान करे तहां यही शुद्धि विधि लेय ॥११

विशेष

जो नर नानाव्याधियुत ऋणी कृपण वा होय ।
क्रियाहीन अति मूढ़मति पाखंडी दुठ जोय ॥११२